

१ समविस्फु॥ गार्॥ ध्यावाः ॥ १२॥



[illegible][illegible]



सुखहानुवज बलमनरु बंवरु धर्मिक बाहुव ॥ ओं ट किं ४ हूं २ ट किं रु हा ॥ मूडा दर्श  
न ॥ कम लाव रु सरवा धि स्थन ॥ ओं श्री बज रु ह न न क रु रु ट जा कि नि जाल सुव सं स्वा हा  
॥ ओं रेव रु न रु ह रु वी वि प्रान रु सा न य रु ॥ म रु व रु रं य रु जा रु न रु से हा य ॥ ओं व रु य रु सा रु  
॥ ओं व रु मं व रु स्वा हा ॥ ओं व रु य रु स्वा हा ॥ ओं व रु दि य रु स्वा हा ॥ ओं व रु ने व रु स्वा हा ॥ ओं व  
ज रु ला जा य रु स्वा हा ॥ य रु य रु हा न य रु जा न रु धि स्थन ॥ ओं न रु का न रु म रु व रु सर्व धि र्मी ना मा घ न रु

लयन साग ॥ ओं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥  
 कृष्णं विदुः शंकरं ॥ कृष्णं विदुः शंकरं ॥ कृष्णं विदुः शंकरं ॥ कृष्णं विदुः शंकरं ॥ कृष्णं विदुः शंकरं ॥  
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

卷之四











गानहं खं हं ॥ डो वडसुनजानशंशं ॥ डो वडकालानननकहं ॥ हं कानका वृदिणाननः  
समिकपधवगिगानन ॥ आदिविघ्नानहदयकीलयं ॥ २ ॥ घघघाटय २ सर्वदृष्टानहं  
रुह ॥ डो किनय २ सर्वपायानहं रुह ॥ डो वडकिलवडधनआहाययमिसर्वविप्रविनाय  
कानां कायवाकवीरुवडानुकिनय २ हं रुह ॥ डो वडमफलकिलुं आकाठय २ हं रुह ॥  
॥ मिनी विघ्नरोवयग ॥ कक १ सहदय २ हं कालु ॥ मिनि १ गड २ थक ३ अक ४ निष ५ वन

आ २

गलागुगुलु ॥ अनादिसिद्धि ॥ वडसंवलरुगावंकंरुगावकिसमायनसमा ॥ लययमः  
॥ गगोहदीडनमिमालारिक ॥ कफुसानवड ॥ आकाशद ॥ गदृष्टा ॥ अरिमविमरिसंपद  
समकुसमयम ॥ लंपविम ॥ समलनिकृत्यमनामयिरि ॥ पडादविरि ॥ पडायग ॥ ३ ॥  
डो वडह ॥ हनूकपवसकावायपाय ॥ अखं ॥ आवमनपा ॥ कथपिक ॥ साहा ॥ लरेवगः  
य ॥ ३ ॥ डो वं ॥ पाथन्याग ॥ डो वडह ॥ हनूकहं ॥ रुडा ॥ किनीडालसंव ॥ सा



हम अंकीं ४ हं हं हं हं हं ॥ अं हं हं हं हं हं ॥ किनी य व ड व हं नी य व ड व ने ना न नी य हं ॥  
हं हं हं हं हं ॥ दा न ॥ अं हं किनी य हं हं हं ॥ अं लाम हं हं हं ॥ अं व हं हं हं हं ॥ अं न पि  
नी य हं हं हं ॥ अं वा श्री वि रु म ग हा ॥ हं हं हं ॥ ४ ॥ अं नो वा ॥ ०० ॥ अं का का ॥ अं हं हं हं  
उ ल का ॥ अं हं हं ॥ अं अ ना ॥ अं हं हं ॥ अं भू क ना ॥ अं हं हं ॥ अं य मे डा किनी हं हं ॥ अं  
य म ड नी हं हं ॥ अं य म ड डी हं हं ॥ अं य म म थ नी हं हं ॥ अं व डी य हा ना य सा हा ॥ ॥

अं ग हं हं ला य सा हा ॥ ॥

अं क ला क ना य सा हा ॥ अं क नं क र न वा य सा हा ॥ अं अ हं हं हा ना य सा हा ॥ अं नं श्रि व न हं  
ना स ना य सा हा ॥ अं धा ला भ का ना य सा हा ॥ अं किलि कि ना य सा हा ॥ ५ ॥ वा य ॥ अं य हा ल  
पू जा ॥ वा द ग ना म्हा ॥ ६ ॥ अं व ड वि न हं ॥ अं व ड वं ॥ अं गं ॥ अं व ड मृ दं रा फी ॥ अं व ड मू  
नू ड अ ॥ अं व ड ला ॥ अं हं ॥ अं व ड सा ला गं ॥ अं व ड री थ फी ॥ अं व ड नू थ न ॥ अं व ड पू थ  
हं ॥ अं व ड भू थ गं ॥ अं व ड वं ला कि र फी ॥ अं व ड गं थ व ड नू ॥ अं व ड भ व ड नू ॥ अं व ड  
अं व ड द र्शन हं



१०  
नवकुंभी ॥ अविजातमिदं ॥ जो धर्म धातुवज्रहं ॥ पञ्चवाद नकुंभि ॥ सूर्यरुहानसदा  
हजगदर्थप्रमथकं चिंतामनी निवारकं श्रीसंवत्तनभासुता ॥ व्याफविलमहाहानसंघमनिसु  
दाथिकं कृपाकारुमहाबाहुं श्रीसंवत्तनभासुता ॥ ७ ॥ मरुतर्पण ॥ डानेभासुतागवकवीनवी  
प्रमथनाय हं हट् ॥ नभामहास्यामिसुनिताय ॥ डानेभासुतामकूटाकूटाय नमाड एंक लागरी  
खनमूखाय ॥ नभामहासुता रुद्रहासनाय ॥ नभाय नसुता भयेक भूलखडागभावि ॥ नभामहा

पुत्रमविनधनाय नभामहाधुमांधका नाय वपूषा यद्गं हं हट् ॥ ८ ॥ नगापापदभनां ॥  
कृताकारिकमनूमादिकमघमखिलनिर्दिगघानां प्रमिदभयामिपूतक ॥ पूनसंवत्तनविज  
॥ अत्रात्रकखड्गडिभारुसजिनसूतसंरुगानिक भलानिजनूमादिकानिवा ॥ ओसंम्यकविना  
मयामिघडिननवादीतिरयं भलनयागगा ॥ सिस्वरीहावनवा ॥ ओविरुंविन ॥ अत्रनूरुन  
मार्गकथासंवत्तादिथाग ॥ पुथमसमाधिडागा ॥ ९ ॥ नगामेशीकनूक्षामृदिगापकावजु



ब्रह्मविद्यानां शिवयोगः ॥ ओं स्वस्ति नमस्तुभ्यं सर्व धर्मा स्वस्ति नमस्तुभ्यं ॥ गंगा अरिषिक ॥ ओं अरिषि  
कृतमां सर्व विनयागिनः ॥ यथा हि जायमानसनापि तां सर्वगं आगतां कथां हं प्रापयिष्या  
मिह हस्तुदिव्य नवाचिनां ॥ ओं आ सर्वगं आगतां अरिषिक समधिपदं ॥ १० ॥ गंगामकूट ॥  
अरिषिक महावज्रने धातुकं नमस्कृतं यथा कं पूजनार्थं यमकूटं पंचकूटं ह  
वं ॥ ओं वज्रध्वजं अरिषिचक्रं ॥ ओं वज्रवज्रिणी अरिषिचक्रं ॥ ओं वज्रवज्रिणी अरि  
ओं सर्ववज्रवज्रमनिमहावज्रकूटं ॥ १ ॥

विंशतां ॥ ओं धर्मवज्रिणी अरिषिचक्रं ॥ ओं कर्मवज्रिणी अरिषिचक्रं ॥ मकूटं ॥ ओं  
अद्यारिषिक त्वमसि वज्रनामा अरिषिक ॥ ओं दं सर्ववज्रलंगक वज्रसिद्धय ॥  
वज्र ॥ वज्राधिपतिस्मरिषिचक्रं मित्रिषु वज्रसमयस्त्रं हा ॥ वज्रध्वज ॥ यद्येव वज्र  
मन्त्रमरिषिचक्रं मित्रवज्रनामा अरिषिक ॥ ४६ ॥ हनूक वज्रनामकं आगतां रुद्रवज्र ॥ नाम ॥  
रुद्रादि ॥ आपूर्ववज्रं दाकृत्वनयायादियूष्यन्तां ॥ यत्नमयदा वज्रालाभापशुवाद्यः ॥



नमुनि ॥ कथं ॥ ॐ किमधुनादिमहायागद्विक्रियसमाधि ॥ कायजाग ॥ ११ ॥ अथाः  
पूयः सांयः सुनिकर्षे ॥ ॐ किजायथाग ॥ १२ ॥ ककावलिखवना ॥ यंकावनवायम  
धुलंकद्वयदि आकाशकनके मधुपियवृद्धिवायविभुक्तयमराजनं विविह ॥ कुरुक  
दियविपूविमं वं नृदिं खंदूं सांमांयांतां वंकावजागयवामृगयवपुद्वियनिष्ठा यवायुप  
सिकरुलिगाप्रिस्त्रायविलिननामाकनादिकं अरुिनवादिगंरा नूवर्कं कडवयंयलाक

भक्तद्वयवियासदवर्कं विक्रियमाजां कविता भूमस्वामृगमयधुक्तखवांगककायविलीनः  
मिथीरुययावावमदभसंमिथयंन ॥ मीमीरुं विविहकद्वयविजं नृद्वं ॥ ॐ कुरुनयंयं  
दृष्टाकडभयभदभदिगवहीन्याविनविभयविहनाकमानियकरीवाकनयपविष्टविः  
चिंकयग ॥ जं नृद्वं वविनृविष्टान ॥ अथायूयंसांयसुनिकर्षे ॥ १३ ॥ ककावलिखा  
विपविष्टोक्तवधुयुक्तं नृद्वयांगं गंदृष्टा ॥ जं १५ न्यान्यानृगतासर्वधर्मा ॥ १५ ॥ यनस्यनानृगः











[illegible]

विश्वं हूं रुद्र रुद्र स्वाहा ॥ १५ ॥ अखरखादि सर्वयक्रनाकसखगपठयिमावात्मा जाय  
मात्रा किन्यादयश्च ०० मंत्र विगृह्य लुसमय नक्र लुसमय सिद्धिं पयच्छ लुयथे वयाथस्व  
उक्तार्थपिवर्थक्षिप्रार्थमाशि क्रमार्थमसर्वसत्त्वानां सर्वाकाराणां सत्सखं प्रवृद्धयसाहाका  
रुवल्मुद्गाहं रुद्र रुद्र स्वाहा ॥ १६ ॥ यलाघं मुक्ति कार्यं धरा सद्यः सकथापि पूजा मज्जीकेथ  
॥ १७ ॥ धनद व पूजा ॥ स्वां ॥ स्तुता व पुष्पाद्यादि ॥ धूप ॥ ओं रुद्र गवन्धी नू मूक सर्वविः



या वाङ्मनमाशुभकर्तुमिच्छामि गताथमशुलंकनूशात्मकं सिष्यानामनूकं यार्थयूष्माकंपू  
जनात्रकभूरुक्त्वमरुगवन्पुगादं कर्तुमर्हथ ॥ समन्वाहर्तुमां ब्रह्माकारदर्थक्रियाः  
र्थदारुलसुवाधिसखाश्चजाजान्यामकुदवगाहवगासाकयालाश्चरुगासंवाधिसना  
माधनारिवगाः सखायकविगुक्कजवक्रुव ॥ नमूकनामा वार्थहयथाशकुपवाचन ॥ न  
नूकंयामयादायवक्रुधूपस्यगलेधुलेसहिगांसर्वसानिष्कं कर्तुमर्हथवक्रुधूपनिर्याकया

मिवकधूपसादा ॥ १८ ॥ नूयमसरुलंकर्मसरुलकिविगंजमसमयंसमयदवानारुवगा  
हनसंसयत्रुविवर्होरुविष्यामिवाधिविरेकचरुग ॥ १९ ॥ गथागगाकुल्लयिगिममायायनसम  
य ॥ नूयममदिव ॥ माहययहामहयनरुनसन्निपाधरुवहयसर्ववृद्धनिमलुनागुनिमलु  
न ॥ १९ ॥ दवलोन् ॥ उडिंलगनंरुवसत्तहद्विस्तिगस्यसर्वलिक्कस्यववधर्मकूवाधि  
यम्भनिस्सयदायसत्तजनकस्यमहाशुखात्मकस्यकलंगंरुवकुगयनमारुस्वके ॥ उंसर्व







यमागमः सर्वसत्त्वा सर्वधा सर्वरूपा च कवत्वा सर्ववेसु खिनसु सर्वसुखिनामयाः सः  
 वरिडा नियम्युः साकचित्थायमागमजा निह रूपा निस्समार्गेता निहिता निरूमां वथ  
 मां कविकं कूर्च उभेयीसु रंगं पजा सुदिवा वलाशो वचनकुधर्मा ॥ २४ ॥ नेवीयस  
 य ॥ अनेव यपुकि गृह्णतु खाद्य रूपां धिक्पुरु महायानसमूयकं वसुवर्क समुच्चि गंशः  
 वरुनेव यखाहा ॥ २५ ॥ अना ॥ अनेभा रूपा वरुवी ववी वसु नायत्यादि ॥ २६ ॥

मग ॥ नेगहि नामा वरु च लको खान नाधिपा वचिगयादयभा हानपदियादकभा हजाल  
 ऊदिपमाना वचयनिकगु ॥ अ ॥ वरुदि यखाहा ॥ २७ ॥ अपृथ न्या ॥ अ ॥ श्री वरुदि हन  
 वरु कर्तुं रूपादि ॥ २८ ॥ गायजाय ॥ अ ॥ धर्मा ख्यादि ॥ २९ ॥ दक्रनाः कियव ॥ अने  
 भारुगवमं श्री कृमानरु गायवाधिसत्त्वाय महासत्त्वाय महाकाचूनि काय ऊजमान  
 सवक्रार्थगा इलदक्रना सयदाषयगू ॥ ३० ॥ नूका वमूख ॥ अ ॥ नूका वमूख सर्वध



मर्मनांसाद्यं नृत्यं नत्वा ज्ञानं हं रूपासा ॥ ८० ॥ वाक्यपूजा ॥ मधुलथिलः किं न  
 रुक्मगायया यवा ८०० ॥ ममा कल ॥ जिवरुसखे समय मनूपा नयवजसखे नपापः  
 मिश्रा दयामरुवसु गाव्या मरुवसु याथा मरुव नूनलक मरुव सर्व सिद्धि मप्रदु सर्व  
 कर्मसूत्रमचिरु प्रयंक नूनं हहह हा भूगव नूर्व न था ग र व ड मा मि मूत्र व जी रु  
 वमहासमयसखे न ॥ ८०० ॥ ॥ ज्ञानं प्रोफ वाय गिहा नाव शंक चम या विहा ॥ य

नूकं मभि कं नार्थं कत्तर्व कउमह सि क नुमह क संव द्वा द व गा स गा व य उ ज्ञा या सा  
 कया ला अमा निरु गा वि द्वि कया गा कि स खि थ प रि सि थ द न य क १ नू प्र हा य न म म  
 १ य त्व कं दू क गं कि कि लि म या मू द्र थि या पू न १ य क र का य उं पा यं य ल्क गं वा क रं या  
 यं य ल्क गं वि रु ज या य र त्त्वं द म या म द ॥ क र व यं क र्त्त या ना थ यदि उ ज्ञा सि द दि ना व  
 क उ द व गा र्त्त व नू धी य गि मा वि न क र्त्त दान य नी गा कि स खि क र्त्त र्त्त ॥ न मा मु क र्त्त



इन्द्रनक्रगवनायनममुगसत्यपकासमूनसत्यपकिष्ठा यपजायभावस्य सर्ववर्मा  
सहलाहवकुवक्रकमध्व ॥ ६०३ ॥ अग्निर्वदि ॥ ओं क्रीं वसुर्वसुत्वा र्थसिद्धिं दः  
त्वा यथानृगध्वं वृद्धि विखययूनला यगमनाय च ॥ ६०४ ॥ ओं वज्रमधुलं मे ॥  
विमर्जि मे ॥ ६०५ ॥ वगपूजा ॥ दक्रनाय पूजा ॥ अगहन ॥ समया वक्र ॥ गनवक्र  
॥ ६०६ ॥ ॥ ॥ निदवपूजा वीदिसमाप ॥ ६०७ ॥ ॥ सैवगुल ५३ मिर्वे भावक

[illegible]





ॐ नमो श्रीवज्रसूत्रायः॥  
कथमाद्यव्ययः स्याद्यद्यिद्य द्युद्युद्य  
ॐ











كتاب في